SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

भारती विजय, पी.एच–डी., **मौसम पारीक,** पी.एच–डी., शिक्षा विभाग
संजय टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, लाल कोठी, जयपुर, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
भारती विजय, पी.एच–डी.
मौसम पारीक, पी.एच–डी.,
E-mail : bhartipvijay@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/03/2025
Revised on : 30/04/2025
Accepted on : 09/05/2025
Overall Similarity : 03% on 01/05/2025

शोध सार

माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यालय की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है। विद्यार्थियों के मनोविज्ञान का अध्ययन विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि तथा समायोजन के बिना अधूरा है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर ही देश के भौतिक,तकनीक व वैज्ञानिक विकास का दायित्व है। उनकी कार्यशीलता में ही सुनहरे भविष्य की कल्पना छिपी हुई है। उनके हाथों में ही देश के सुनियोजित निर्माण की नींव है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का विकास हो चुका होता है। इसी अवस्था काल को किसी व्यक्ति के जीवन का निर्माण काल माना जा सकता है। विद्यार्थियों को सुसमंजित रूप में समाज में प्रस्तुत करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य रहता है। विद्यार्थियों को संस्कारबद्ध करने में अध्यापक तथा अभिभावक दोनों का ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है अतः दोनों के लिए ही आवश्यक है कि वे विद्यार्थी की ठीक प्रकार से पहचान करें तथा तदनुरूप ही उसे विकसित होने के लिए वातावरण की व्यवस्था करें।

मुख्य शब्द

संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी.

प्रस्तावना

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि किशोर अवस्था के समय प्रत्येक विद्यार्थी मानसिक व संवेगात्मक रूप से अस्थिर रहता है। उस समय विद्यार्थी का समायोजन ही उसके विवेक को निर्धारित करता है। यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक विद्यार्थी को अभिभावकों से भावनात्मक सहयोग प्राप्त हो, अतः विद्यार्थी को स्वयं के समायोजन पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है।

माध्यमिक स्तर पर ही विद्यार्थी के लौकिक जीवन में पर्दापण का समय होता है, अतः यह स्वाभाविक है कि

उसके जीवन का प्रभाव उसकी संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन पर पड़े।

विद्यार्थी अपनी विचाधाराओं, दृष्टिकोणों में अपने संस्कारों की झलक देता है। उसका पारिवारिक और विद्यालय जीवन जितना उत्तम व सुन्दर रहता है, उसकी विचारधाराओं में उतनी ही सुन्दरता दिखाई देती है। मनुष्य के जन्म से लेकर मरण तक व्यवहार तथा विचारों में परिवर्तन करने वाली प्रक्रिया ही शिक्षा है। बालक के व्यक्तित्व का विकास विद्यालय के वातावरण पर ही निर्भर करता है। विद्यालय में पाठयक्रम संकीर्ण व एक ही दिशा में न हो कर विस्तृत, लचकदार, बालकों की योग्यता व हित को ध्यान में रखकर होने से छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन पर प्रभाव पड़ता है। यह प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में सामाजिक, मानसिक एवं व्यैक्तिक समायोजन को अनुकूल अथवा प्रतिकूल रूप से अवश्य प्रभावित करता है।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी को अपने भावी जीवन की आधारशिला स्थापित करने का अवसर मिलता है जिसमें उसकी संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का भी भरपूर योगदान रहता है।

संवेगात्मक बुद्धि जीवन के छोटे–बड़े अनुभवों से परिपक्व होती है। यदि अनुभव सकारात्मक हैं तो व्यक्ति संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान एवं मर्मस्पर्शी होगा। यदि अनुभव नकारात्मक है तो व्यक्ति येन–केन–प्रकारेण अपना कार्य सिद्ध करने हेतु उचित अनुचित माध्यमों का प्रयोग करेगा।

वर्तमान युग को जटिलताओं का युग माना है, क्योंकि मनोचिकित्सकों के विचारों के अनुसार जीवन में जटिलताएँ बढ़ती जा रही हैं। आज का विद्यार्थी ज्यादा तनावपूर्ण जीवन जी रहा है। बेरोजगारी, आर्थिक समस्याएँ,परिवारों का विघटन उत्तम भविष्य हेतु कड़ी बाधा है। विद्यार्थियों का अपने बारे में सकारात्मक विचार रखना आवश्यक है जिससे वो स्वप्रेरित होकर कार्य कर सकें। सकारात्मक सोच व उच्च आत्म सम्प्रत्यय स्तर वाले विद्यार्थी ही रचनात्मक कार्य हेतु योगदान दे सकते हैं। सांवेगिक बुद्धि एवं समायोजन के निर्माण एवं विकास हेतु एवं जीवन में वास्तविक सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति के स्वयं के बारे में सकारात्मक विचार होना आवश्यक है। यह सम्भव है कि मानसिक दबाव बना रहता है। संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है तथा सामाजिक रूप से भी ऐसे विद्यार्थियों को नीचा देखना पड़ता है। इन्ही सब कारणों को आवश्यक जानकर शोध हेतु प्रस्तुत समस्या का चयन किया।

समस्या का औचित्य

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का विकास हो चुका होता है। इसी अवस्था काल में किसी व्यक्ति के जीवन का निर्माण काल माना जा सकता है। विद्यार्थी जो भी इस अवस्था काल में सीखता है या प्रगति करता है वही उसके भविष्य में आगे आधारशिला होती है। वह समायोजन करना सीखता है।

विद्यार्थियों को सुसमंजित रूप में समाज में प्रस्तुत करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य रहता है। विद्यार्थियों को संस्कारबद्ध करने में अध्यापक तथा अभिभावक दोनों का ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है अतः दोनों के लिए ही आवश्यक है कि वे विद्यार्थी की ठीक प्रकार से पहचान करें तथा तदनुरूप ही उसे विकसित होने के लिए वातावरण की व्यवस्था करें।

माध्यमिक स्तर को विद्यार्थी के जीवन निर्माण की संज्ञा दी गई है। नींव कमजोर होगी तो भवन भी कमजोर होगा। सांवेगिक बुद्धि एवं समायोजन के महत्त्व को समझते हुए माध्यमिक स्तर की छात्राओं एवं छात्रों की सांवेगिक बुद्धि व समायोजन पर पडने वाले के प्रभाव का अध्ययन करना आवश्यक है। इस क्षेत्र में अनुसन्धान कार्य कम हुआ है अतः यह ज्वलंत बिन्दु दिखाई देता है। माध्यमिक स्तर पर छात्राओं एवं छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का स्तर किस प्रकार का होता है। इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन से संबंधित उपर्युक्त समस्या का चयन किया है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

प्रमुख तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

- **माध्यमिक स्तरः** प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर से तात्पर्य शिक्षा के उस स्तर से है जिसके अन्तर्गत विद्यालयी शिक्षा में कक्षा–9 एवं 10 का संचालन किया जाता है।
- **संवेगात्मक बुद्धिः** संवेगात्मक बुद्धि के अंतर्गत अपनी तथा दूसरे लोगों की भावनाओं एवं संवेगों को अनुश्रवण करने, उनमें विभेद कर सकने तथा इस सूचना के आधार पर अपने चिन्तन अथवा विचार तथा व्यवहार को निर्देशित करने की क्षमता निहित होती है।
- **समायोजनः** समायोजन से तात्पर्य मनुष्य का अपने पर्यावरण से सम्बंध तथा संतुलन कायम करने की क्षमता से है। इस प्रकार बालक के चुनौतियों से कुशल एवं सफल समन्वय तथा समझौते की स्थिति तक पहुंचने की निरन्तर प्रक्रिया को ही समायोजन कहा जाता है, जो उसकी बौद्धिक, भावात्मक एवं आध्यात्मिक प्रज्ञा पर बहुत हद तक निर्भर होता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी विद्यालय के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी विद्यालय की छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

H_{01} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी विद्यालय के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

H_{02} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी विद्यालय की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

शोध अध्ययन की परिसीमाएं

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल जयपुर जिले तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल जयपुर जिले के सरकारी माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं को ही शामिल किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में केवल 14–16 वर्ष तक के छात्राओं एवं छात्रों को सम्मिलित किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में 50 छात्राओं एवं छात्रों को लिया गया है।

शोध में प्रयुक्त विधि

शोध के लिए सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त समझा है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत जयपुर जिले के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया है जिनकी संख्या 50 है। 50

विद्यार्थियों में 25 छात्राओं एवं 25 छात्रों को शामिल किया गया है। अध्ययन करने के लिए जयपुर जिले के दो सरकारी में विद्यालयों में से कक्षा 9 एवं 10 के विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु चुना गया।

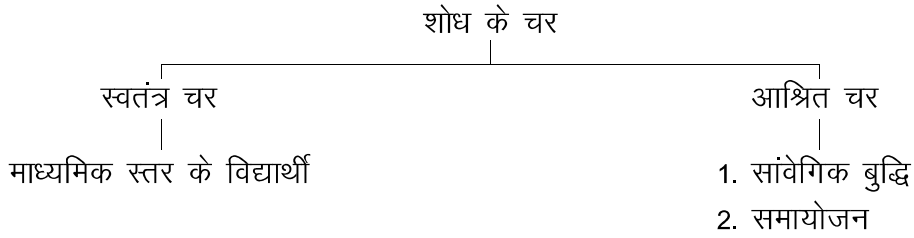

शोध हेतु प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में डा. एस.के. मंगल एवं डा. शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी तथा डा. ए.के.पी. सिन्हा द्वारा प्रतिपादित समायोजन परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकी के अन्तर्गत सहसम्बन्ध का प्रयोग किया है।

आंकड़ों का सारणीयन, विश्लेषण तथा व्याख्या

परिकल्पना – 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी विद्यालय के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया जाता है।

तालिका 1

विद्यार्थी	संख्या (N)	चर	सहसंबंध गुणांक का गणना मूल्य	सह–संबंध गुणांक का तालिका मूल्य	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय के छात्र	25	संवेगात्मक बुद्धि	0.149	2.01	0.05 पर
		समायोजन			स्वीकृत

df=N-2 = 23

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या – 1 माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय के छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया जाता है से सम्बन्धित है।

df 23 के लिये सह–संबंध गुणांक का तालिका मूल्य 0.05 स्तर पर 2.01 है। गणना करने पर सह–संबंध 0. 149 प्राप्त हुआ जो तालिका मूल्य के स्तर से कम है। अतः निराकरणीय परिकल्पना "माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया जाता है" स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन में सार्थक सह–संबंध नहीं है।

परिकल्पना – 2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी विद्यालय की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि स समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया जाता है।

तालिका – 2

विद्यार्थी	संख्या (N)	चर	सहसंबंध गुणांक का गणना मूल्य	सह–संबंध गुणांक का तालिका मूल्य	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय की छात्राऐं	25	संवेगात्मक बुद्धि	2.03	2.01	0.05 स्तर
		समायोजन			अस्वीकृत

df=N-2 = 23

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या – 2 माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया जाता है से सम्बन्धित है।

df 23 के लिये सह–संबंध गुणांक का तालिका मूल्य 0.05 स्तर पर 2.01 है। गणना करने पर सह–संबंध 2. 03 प्राप्त हुआ जो तालिका मूल्य के स्तर से अधिक है। अतः निराकरणीय परिकल्पना "माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया जाता है" अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि माध्यमिक स्तर अध्ययनरत् सरकारी विद्यालय की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन आपस में संबंधित है।

निष्कर्ष

परिकल्पना–1 माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष– 1 उपर्युक्त परिकल्पना का सांख्यिकी विश्लेषण करने के उपरान्त निष्कर्षस्वरूप पाया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन में सार्थक सह–संबंध नहीं है।

परिकल्पना–2 माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष–2 उपर्युक्त परिकल्पना का सांख्यिकी विश्लेषण करने के उपरान्त निष्कर्षस्वरूप पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि आपस में संबंधित है।

शैक्षिक निहितार्थ

पिछले दो वर्षों में परिवर्तन की प्रक्रिया तेजी से चल रही है। यद्धपि परिवर्तन प्रत्येक दौर में होते हैं किन्तु वर्तमान में इन परिवर्तनों की गति अपेक्षाकृत तीव्र है। इसके परिणामस्वरूप हमारे राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ढांचे व हमारे जीवन में भी बदलाव आया है। इन परिवर्तनों ने व संचार माध्यमों की उपलब्धता ने विभिन्न देशों के मध्य दूरियों को कम कर दिया है। विश्व के सभी राष्ट्र एक दूसरे के परस्पर सम्पर्क में आ रहे हैं व एक दूसरे की नीतियों, कार्य प्रणालियों व शैक्षिक संरचना को प्रभावित कर रहे हैं। इन्हीं सब कारणों ने शिक्षा को विकसित होने के भरपूर अवसर दिये हैं।

अन्य देशों की भांति हमारी शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा नीतियों, शिक्षा के लक्ष्यों का भी विकास हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा के नये आयाम प्राप्त किये हैं। वही नवीन समस्याओं का सामना भी उसे करना पड़ रहा है।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यालय की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है। विद्यार्थियों के मनोविज्ञान का अध्ययन विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि तथा समायोजन के बिना अधूरा है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर ही देश के भौतिक, तकनीक व वैज्ञानिक विकास का दायित्व है उनकी कार्यशीलता में ही सुनहरे भविष्य की कल्पना छिपी हुई है।

सुझाव

1. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।
2. आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन का अध्ययन किया जा सकता है।
3. विद्यार्थियों की दुश्चिंता, संवेगात्मक बुद्धि एवं बुद्धिलब्धि में सम्बन्धों का अध्ययन किया जा सकता है।
4. विद्यार्थियों के समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

5. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं की संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6. सरकारी एवं गैर सरकारी अध्यापकों के समायोजन एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
7. राजस्थान के अलावा अन्य राज्यों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि व समायोजन के प्रति अध्ययन आदतों का अध्ययन किया जा सकता है।
8. प्रस्तुत शोध में समय एवं साधनों के आधार पर न्यादर्श अत्यन्त सीमित (50 विद्यार्थी) लिया गया किन्तु भावी शोध में व्यापक न्यादर्श लिया जा सकता है।
9. बदलते राष्ट्रीय एवं सामाजिक परिवेश में इस विषय के अन्तर्गत किये जाने वाले अध्ययन एक अनवरत प्रक्रिया है।

संदर्भ सूची

1. भटनागर, ए.बी.; भटनागर, मीनाक्षी; भटनागर, अनुराग (2006) *भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण।
2. त्यागी एवं पाठक (2005) *भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा। चतुर्थ संशोधित संस्करण।
3. पुरोहित, जगदीश नारायण; व्यास, हरिशचन्द्र; शर्मा, मुरली मनोहर (2002) *भावी शिक्षकों के लिये आधारभूत कार्यक्रम"* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पंचम संस्करण।
4. भार्गव, महेश (1997) *मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन,* हरप्रसाद भार्गव बुक हाउस, शैक्षिक प्रकाशन, आगरा।
5. वुड़वर्थ, डी.जी. (1963) *साइकोलॉजी,* यूनिवर्सिटी पेपनबैक, लन्दन।
6. बिंघम, डब्ल्यू.वी.डी. (1937) *एप्टीट्यूड, टेस्टिंग,* हॉपर एण्ड ब्रादर्स, न्यूयार्क।
7. तनेजा, वी.वी. (1958) *फर्स्ट कोर्स इन गाइडेन्स एण्ड काउन्सलिंग,* महिन्द्रा केपिटल पब्लिशर, चण्डीगढ़।
8. लुण्डबर्ग (1962) *सोशल साइकोलोजी,* मैकग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।
9. सिक्सथ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन रिसर्च, नई दिल्ली।
10. थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, (1978–1983) एम.बी. बुच, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
11. फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, (1988–1992) एम.बी.बुच. एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
12. सिक्सथ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन रिसर्च, नई दिल्ली।
13. http://www.springerlink.com/content/q644774x2r505nhv/, Accessed on 01/10/2025.
14. http://www.haworthpress.com/store/ArticleAbstract.asp?Iäz62979, Accessed on 18/12/2024.

****